चन्द्रनाथ योगी कृत 'माया मिली ना राम' में नायक का वैशिष्ट्य

अर्चना रानी*

प्रस्तावना

नायक या नेता प्रधान पात्र को कहते है नेता शब्द 'नी' धातु से बना है जिसका अर्थ ले चलना होता है जो कथा को फल की ओर ले जाता है वही नेता होता है। इसी को फल–प्राप्ति होती है। कहीं –कहीं नाटकों या उपन्यासों में यह पता लगाना कठिन हो जाता है कि इसका नायक कौन है। नायक जानने का यही साधन है कि हम देखे कि कथा का फल किसके साथ लगा हुआ है । श्रोता, द्रष्टा या पाठक किसके उत्थान या पतन में अधिक से अधिक रूचि रखते है । फल हमेशा मूर्त्त नहीं होता। प्रतिज्ञा का पूर्ण होना एक प्रकार का फल ही होता है।(1)

''माया मिली ना राम'' मैं चन्द्रनाथ योगी नायक रहे है । क्योंकि पूरा उपन्यास उन्हीं के चारो और घूमता है इसकी रचना इन्होनें ही की है। चन्द्रनाथ योगी में बहुत से गुण व अवगुण विद्यवान रहे है। जिनका वर्णन इस प्रकार से है।

नायक के रूप में चन्द्रनाथ योगी के गुण

नायक के रूप में चन्द्रनाथ योगी के गुणों का वर्णन इस प्रकार से है

चन्द्रनाथयोगी में सहनशीलता का गुण विद्यवान है। जोकि उन्होंने "माया मिली ना राम" में दर्शाया है। जबचन्द्रनाथ योगी के बड़े भाई को जेल और जुर्माना हो गया तब उनकी पत्नी महन्त जी के पास सिफारिश लेकर आती है। तब चन्द्रनाथ योगी अपने महन्त जी को मुकद्मेंबाजी द्वारा हजारों रुपयों की दलाली करने से रोकता है तब महन्त जी के कड़वे शब्दों में कहते है कि तुम हमारे चेले हो और मेरे काम में बाधा मत पहुंचाओ। और तुम्हारी पत्नी क्यों सिफारिश लेकर मेरे पास आई थी। उस समय वो सब्र का घूंट पीकर खामोश रह गए। ये उनकी सहनशीलता को दर्शाता है।(2)

चन्द्रनाथ योगी मठ को छोड़कर कांग्रेसी बन गए और जनता तक कांग्रेसी लोगों के सुझाव पहुंचाएं। और वो कई बार जेल भी गए। जेल में उन्हें कोल्हू में जोड़ दिया गया। पूरा महीना उन्हें कोल्हू में जोड़ दिया गया और फिर बाद में बाण बांटने में लगा दिया गया। जेलर साहब व सुपरिटेंडेंट साहब बहादुर भी उनसे खुश हुए। और वो अपने मुंह से कह उठे की कांग्रेस वालों में काफी आदमी नेक नियत के है। इस तरह चन्द्रनाथ योगी ने जेल में बहुत सी यातनाएं सही, देश को आजाद करवाने में उनका अहम योगदान रहा है। (3)

जब चन्द्रनाथ योगी के दोनों भाई गुजर गए तब उनकी पत्नी उन्हें घर ले जाने आई तब उन्होंने पांच बच्चों की मां को छोड़ कर पैंतीस करोड़ वाली मां को चुना। उन्होंने अपने घर जाने की बजाय धरती मां पर अपने प्राण न्यौछावार करना उचित समझा । जो उनकी देशभक्ति को दर्शाता है ।(4)

चन्द्रनाथ योगी ने प्रारंभ शिक्षा मठ में गांव के बच्चों के साथ पढ़ना आरम्भ किया । और आगे की पढ़ाई हरिद्वार में पूरी की । उन्होंने कई भाषाओं का अध्ययन किया। उन्होंने अनेक विषयों का अध्ययन किया । चन्द्रनाथ योगी ने जेल में किसान नामक उपन्यास लिखा। इन्होंने कई पत्रिकाएं निकाली । चन्द्रनाथ योगी "माया मिली न राम" नाम उपन्यास लिखा। जिसमें उन्होंने अपने जीवन संघर्ष के बारे में बताया। ये संस्कृत के अच्छे ज्ञाता रहे हैं। (5)

चन्द्रनाथ योगी व उनके भाई व भाभी प्लेग के कारण बीमार पड़ गए। जिसमे उनकी भाभी मर गयी और चन्द्रनाथजी जब बीमार थे तब उनके बड़े भाई ने अपने दोस्त से कहा कि मेरा भाई तो मरने वाला है और इसकी पत्नी को मैं ले लूंगा । यह बात चन्द्रनाथ में घर कर गई और उन्होंने निर्णय किया कि मैं अपनी भाई को सौप दूँगा । और अपने दृढ़ निश्चय के कारण ही उन्होंने अपनी पत्नी भाई को सौंप दी ।(6)

चन्द्रनाथ योगी जब कांग्रेसी बन गए तो उनके गुरु जी उनसे नाराज हो गए । किंतु वे अपने निर्णय पर

*शोधकर्त्री पी. एच. डी. (हिंदी), हिन्दी विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक (हरियाणा)

दृढ़ रहे और उन्होंने मठ की गद्दी त्याग कर देश की आजादी वाला रास्ता अपनाया। और इस रास्ते पर उन्हें कई परेशानियों का सामना करना पड़ा पर वो अपने निर्णय पर दृढ़ रहे। और देश को आज़ाद करवाने का प्रयास करते रहे । इसके लिए वे कई बार जेल गए। वहां घोर यातनाएं सही ।फिर अपने निर्णय पर अडिग रहे।(7)

चन्द्रनाथ योगी जब कांग्रेसी बन गए तो कई बार उन्हें जेल जाना पड़ा वहां जेल में उन्हें घोर यातनाओं का सामना निडरता से किया और अपने लक्ष्य से नहीं भटके। उन्हें जेल में कोल्हू में जोत दिया गया, भीषण गर्मी में उनके पास आग जला दी गई। उनसे बाण बंटवाए गए । फिर भी उन्होंने हर परिस्थिति का निडरता से सामना किया और देश को आज़ाद करवाने में अपना पूरा सहयोग प्रदान किया।(8)

चन्द्रनाथ योगी उदार ह्रदय वाले व्यक्तितत्व के रहे है। इन्होंने "माया मिली ना राम" में अपनी उदारता दर्शाई है। जब रामपुर का मिस्त्री जिसकी दो शादियां हो चुकी थी। और वो रामदेवी की बेटी भगीरथी से जबरन शादी करना चाहता था । जबकि भगीरथी की उम्र केवल चौदह वर्ष रही है। तब भगीरथी की माँ व मामा ने कांग्रेस के दफ्तर में दरख्वास्त लगा दी कि हम यह अनमेल विवाह नही करना चाहतें । और चन्द्रनाथ जी कांग्रेसी थे इसीलिए ये दरख्वास्त उनके पास पहुंची । जब सारा गांव रामदेवी का विरोध करने लगे तब चन्द्रनाथ जी ने उनका साथ दिया। और उसे भोजन देने का वचन दिया। ये उनकी उदारता को दर्शाता है।(9)

चन्द्रनाथ योगी दयालू स्वभाव के रहे हैं। उन्होंने मठ में अन्य साधुओं पर दयालुता दर्शाई । वो महन्त जी के प्रिय शिष्य रहे है । किन्तु फिर उन्होंने सबके साथ दयालुता का स्वभाव रखा । जेल में रहकर उन्होंने 'किसान' नामक उपन्यास किसानों के लिए लिखा। क्योंकि उस समय किसानों की स्थिति दयनीय रही है। इसमें इन्होंने किसानों की दयनीय स्थिति दर्शाई है। उनका ह्रदय दया से भरपूर रहा है।(10)

चन्द्रनाथ योगी कर्तव्य निष्ठ रहे हैं उन्होंने कर्तव्यों का निर्वाह किया। जब चन्द्रनाथ के बड़े भाई उसकी पत्नी को लाकर घर छोड़कर मठ चले गए तब चन्द्रनाथ जी कहने लगे कि तुम तो कल ही साधु बने हो और मैं कई साल पहले और मैंने कान भी छेदवा रखें। और मैं अब गृहस्थ जीवन व्यतीत नहीं कर सकता। इसलिए तुम्हें घर रहना चाहिए और मुझे मठ में। इन सब बातों से पता चलता है कि उन्होंने अपने कर्तव्य का निर्वाह किया। अगर वो अपनी पत्नी ना सौपता तो उनका वंश कैसे चलता।(11)

चन्द्रनाथ योगी देश के प्रति भी अपने कर्तव्यों का निर्वाह किया। चन्द्रनाथ जी को प्रेस का काम दिया गया क्योंकि वह लेखक भी थे और छापना भी उन्हें आता था, और उन्होंने यह कार्य स्वीकार करके अपनी देशभक्ति को दर्शाया है।(12)

चन्द्रनाथ योगी को जब भाई की मृत्यु का समाचार मिला तो उनके दिल के ऊपर वज्र आघात हुआ। पहाड़ की भारी चट्टान लुढ़क कर जैसे किसी चींटी पर गिर पड़े और मसली कुचली पिसी जाकर वह अपनी हस्ती से हाथ धो बैठे वैसी ही हालत उसकी हुई। कई क्षण के लिए मेरी आत्मस्मृति गायब सी रही और वे चित्र की तरह स्तंभित और निश्चेष्ट बैठा रहा।(13)

चन्द्रनाथ योगी गांव के लोगों की सहायता करते रहे हैं और गांव के जिन लोगों के पास दवाई के पैसे नहीं होते तो वह अपने पैसों से उनकी दवाई ला देते थे। किंतु जब उनकी पत्नी को उनकी जरूरत थी तो वह उनके लिए कुछ ना कर सके और भावुक हो उठे।(14)

चन्द्रनाथ योगी स्पष्टवादी स्वभाव के रहे हैं। उन्होंने उपन्यास में अपनी कमियों को भी स्वीकारा है। वे स्वयं स्वीकार करते हैं कि एक दिन भाभी व मैं दोनों इतने घुल मिल गए कि आपस में एक– दूसरे को आत्मसमर्पण कर बैठे।(15)

चन्द्रनाथ योगी उपन्यास में स्वयं स्वीकार करते हैं कि पिछले कई दिनों मुझे रामदेवी के घर छिपना पड़ा। और ऐसी अनुकूलता पाकर मैं अपनी सारी पवित्रता खो बैठा। मेरी आत्मतिकता ने भौतिकता पर विजय प्राप्त कर ली। (16)

इन घटनाओं से पता चलता है कि वह कितने स्पष्टवादी रहे हैं। उन्होंने स्वयं अपनी कमियों को स्वीकारा है।

नायक के रूप में चन्द्रनाथ योगी के अवगुण

नायक के रूप में चन्द्रनाथ योगी के अवगुण का वर्णन इस प्रकार से है

चंद्रनाथ योगी ने अपनी धर्मपत्नी के साथ नाइंसाफी की। अपनी बात रखने के लिए अपनी पत्नी को अपने भाई को सौंप दिया। जबकि उनकी पत्नी सच्चा स्नेह उन्हीं(चन्द्रनाथ) के साथ करती रही।

उन्होंने स्वयं लिखा है– "इस उलटफेर को देखकर य।पि मेरी धर्मपत्नी के दिल पर गहरी चोट लगी होगी। पर किया क्या जाए ?विधाता को ऐसा ही मंजूर था।(17)

चन्द्रनाथ योगी के बड़े भाई को जब जेल हो जाती है तब उनकी पत्नी मठ आती है तो वो स्वयं उससे बात ना करके महन्त के पास भेज देते हैं । वो सोचते हैं कभी कोई उन्हें उससे बात करते हैं न देख ले।(18)

जब उनके बड़े भाई की मृत्यु के पश्चात वह चन्द्रनाथ के पास मठ आती है वो उससे झूठा वादा करके कि मैं शीघ्र घर आऊंगा उसे वापस घर भेज देते हैं और बाद में पत्र लिखकर उसे छोटे भाई के साथ जोड़ा बनाने को कहते हैं ।(19)

चन्द्रनाथ योगी "माया मिली न राम" में स्वयं इस बात को स्वीकार करते हैं कि मैं अपनी धर्म पत्नी के साथ किए विश्वासघात को स्वीकार करता हूं परिस्थिति की प्रवलता को ध्यान में रखकर इन के कारण दंड या क्षमाओ में से मैं किस का अधिकारी हूं । इस का निर्णय पाठकों पर छोड़ता हूं ।(20)

चन्द्रनाथ योगी के चरित्र में अनेक उतार–चढ़ाव आए जिनके बारे में उन्होंने स्वयं माया मिली न राम में बताया है । चन्द्रनाथ योगी कहते हैं कि एक दिन वह अपनी भाभी के साथ इतने घुल मिल गए कि आपस में एक दूसरे को आत्मसमर्पण कर बैठे।(21)

'माया मिली न राम ' में एक जगह वो कहते हैं कि उन्हें पिछले दिनों कई कारणों से रामदेवी के घर में छिपना पड़ा और ऐसी अनुकूलता पाकर वह अपनी सारी पवित्रता खो बैठे।(22)

चन्द्रनाथ योगी के गुरु पहले तो उनके पक्षधर रहे किंतु जब चन्द्रनाथ जी कांग्रेसी बन गए तब गुरुजी उनके विरोधी हो गए। तब चन्द्रनाथ जी ने भी अपने गुरु के साथ अभद्र व्यवहार किया जो कि उन्होंने स्वयं स्वीकार किया है । चन्द्रनाथ जी दर्जनों आदमियों के साथ आश्रम में धावा बोलने गए और महन्त जी से चाबियां छीन कर उनकी अलमारी से सनद व चिट्ठियां निकाल ली ।(23)

चन्द्रनाथ जी कहते हैं कि एक तो गुरु के साथ और दूसरा धर्म पत्नी के साथ उन्होंने विश्वासघात किया है। इसके लिए वे दंड के या क्षमा के पात्र हैं यह निर्णय वह पाठकों के ऊपर छोड़ते हैं।(24)

चन्द्रनाथ योगी के नायक के रूप में गुण और अवगुणों के बारे में जानकर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि जहां उनमें गुण विद्यमान रहे वहां कुछ अवगुण भी है। इंसान गलतियों का पुतला होता है। उनसे भी जीवन में कुछ गलतियां हुई है। किंतु अपनी गलतियों को स्वीकार करना उनकी महानता को दर्शाता है। चन्द्रनाथ योगी ने अपने कर्तव्यों का पालन किया देश को आजाद करवाने में अपना सहयोग दिया और इसके लिए उन्होंने मठ का महन्त बनने का अपना सपना भी छोड़ दिया, जो उनकी त्याग की भावना को दर्शाता है। इसलिए उन्हें अच्छे व्यक्तित्व के धनी कह सकते हैं।

संदर्भ

गुलाबराय, काव्य के रूप,	पृव–41
चन्द्रनाथ योगी,	
माया मिली न राम,	पृव–99
वही	पृव–261
वही	पृव–260
वही	पृव–263
वही	पृव–15,16
वही	पृव–263
वही	पृव–241,242
वही	पृव–353,354,355
वही	पृव–263
वही	पृव–96
वही	पृव–387
वही	पृव–206
वही	पृव–396
वही	पृव–14
वही	पृव–395
वही	पृव–97
वही	पृव–116,117
वही	पृव–217,218,219
वही	पृव–406,
वही	पृव–14
वही	पृव–395
वही	पृव–405,406
वही	पृव–406